[श्री अजय नारायण मुशरान]

चुनाव शुरू हुए। चुनावों में गड़बड़ी किए जाने, धन और शक्ति का दुरुपयोग किए जाने के संबंध में बहुत शोर मचाया जा रहा है। मेरा पक्का विश्वास है कि विपक्ष में बैठे माननीय सदस्य भी यह जानते हैं कि जनशक्ति का भी कुछ अर्थ है। 1977 में वे जन शक्ति की बहुत प्रशंसा कर रहे थे और 1984 में वे जनशक्ति को भूल गए हैं। मुझे केवल इतना ही कहना है कि हमें केवल देश की एकता और अखंडता बनाए रखने के लिए ही नहीं बल्कि देश की सुरक्षा के लिए भी मिलकर रहना है। केवल सीमा की सुरक्षा, जान, माल की सुरक्षा के लिए ही नहीं बल्कि सूचना की गोपनीयता के लिए भी हमें एक रहना है जिसके संबंध में हमारे प्रधानमंत्री बहुत संवेदनशील तथा सचेत हैं। भारत सरकार के सर्वोच्च स्तर पर हमें जिस प्रकार के दस्तावेजों तथा लोगों से निपटना होता है उनके बारे में हमें पूरी सतर्कता बरतनी चाहिए। यह बड़े गर्व की बात है कि इस कांड के संबंध में कोई बात दबाई नहीं गई है। प्रधानमंत्री ने सदन में बयान दिया और माननीय गृहमंत्री ने उसका और स्पष्टीकरण किया।

जहां तक आने वाले 5 वर्षों के लिए हमारे ध्येयों तथा आकांक्षाओं का संबंध है, श्रीमान मैं आपकी अनुमति से केवल तीन मुद्दों पर बल देना चाहता हूं।

6.00 म० प०

हम बेरोजगारी के संबंध में बहुत बातें करते हैं। युवकों में व्याप्त नैराश्य के संबंध में काफी कुछ कहते हैं। मेरे विचार में शैक्षिक तथा युवा कल्याण गतिविधियों से हमें जो अपेक्षा होनी चाहिए वह है। एक ऐसे वातावरण का प्रक्षेपण जो युवकों को अपनी पहचान बनाने में मदद कर सके। आजकल युवकों और युवतियों के लिए पहचान की एकदम कमी है। केवल शिक्षा से ही हमारे युवा वर्ग को प्रसन्न, उत्साही तथा राष्ट्रवादी नहीं बनाया जा सकता, इसके लिए डिग्री से आगे भी कोई चीज होनी चाहिए। अवरश्रेणी लिपिक या उपनिरीक्षक की नौकरी से बढ़कर कुछ होना चाहिए। मेरा सुझाव है कि हमारे यहां जनता की पहचान होनी चाहिए, हमें अपने युवाओं को इस ढंग से तैयार करना चाहिए कि वे अपने ध्येयों और उद्देश्यों को देश के विकास के अनुरूप ढाल सकें, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। हमारे देश के युवा प्रधानमंत्री हैं। मुझे विश्वास है कि उनके नेतृत्व में हम आगे बढ़ेंगे और युवा वर्ग में व्याप्त निराशाओं को दूर करने में सफल होंगे।

अंत में मैं यही कहना चाहता हूं कि सरकार बहुत व्यावहारिक तथा बहुत महत्वाकांक्षी राष्ट्र निर्माण योजनाएं लाने के लिए हर प्रकार से बधाई की पात्र है। मैं केवल यही आशा करता हूं कि जहां तक ग्रामीण क्षेत्रों का संबंध है, पेय जल तथा विद्युत जैसी योजनाओं, युवकों की अलग पहचान बनाने में हम जो कुछ भी कर सकते हैं उसे अधिक प्राथमिकता दी जाएगी।

मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया।]

प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी) : अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं राष्ट्रपति जी को उनके अभिभाषण के लिए धन्यवाद देता हूं। मैं उन सभी सदस्यों का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया दुर्भाग्यवश, जितना समय मैं सभा में उपस्थित रहकर वाद-विवाद सुनना चाहता था, उतनी देर यहां नहीं रह सका, क्योंकि इन दिनों कुछ नये मुद्दे सामने आ गये थे। मैं जानता हूं कि आप मेरी बात समझ गए होंगे। लेकिन मैंने अपने कमरे में बैठे हुए कई एक भाषणों को लाउडस्पीकर पर सुना है और अधिकांश भाषणों के बारे में मुझे नोट दिए गए हैं।

विपक्ष में बैठे हुए मेरे मित्रों ने अपना अधिकांश समय गत पांच वर्षों के दौरान सरकार के कार्य की चर्चा करने से खर्च किया है। लेकिन वे भूल जाते हैं कि हम जनता के सामने चुनाव के लिए पिछले पांच वर्षों की उपलब्धियों के आधार पर ही गये थे, और इन पांच वर्षों के दौरान हमारा जो लेखा जोखा रहा है, उसका लोगों ने बहुत बड़े बहुमत से समर्थन किया है। मैं विपक्ष के अपने मित्रों की तरह अपना समय विगत की बातों पर नष्ट नहीं करना चाहता, इसके विपरीत हम भविष्य की ओर देखने में विश्वास करते हैं।

चुनावों के बारे में कुछ मुद्दे उठाये गये हैं और निराधार आरोप लगाये गये हैं। चुनावों के बाद आरोप लगाना एक प्रथा सी बन गई है, क्योंकि ये अच्छे बहाने साबित होते हैं।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : चुनावों से पहले हम बहाने कैसे बना सकते हैं।

श्री राजीव गांधी : मैं आपके विरुद्ध आरोप नहीं लगाना चाहता। लोग जानते हैं कि वे आरोप क्या हैं इसीलिए हम सत्ता में हैं और आप लोग विपक्ष में।

जैसा कि मेरे मित्र ने कहा चुनावों में पैसे की शक्ति, बाहुबल या अन्य कोई शक्ति का कोई महत्व नहीं है; चुनावों में मतदाता ही सब कुछ हैं। जब हम सत्ता पक्ष में इतना बहुमत और विपक्ष में इतने कम लोगों को यहां बैठे हुए पाते हैं तो इसका यही अर्थ निकलता है।

श्री जगत वसु (डायमंड हार्बर) : प्रतिशत के हिसाब से आपको कितने वोट मिले?

श्री राजीव गांधी : घबराइये नहीं, मैं बाद में प्रतिशत की बात करूंगा।

श्री जगत वसु : अगली बार पैसे की शक्ति का प्रयोग न कीजिये।

श्री राजीव गांधी : वसु जी मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूंगा। जो कुछ आपने कहा, वह मैंने सुन लिया है।

प्रश्न यह है कि जनता की नब्ज कौन पहचानता है, 1977 में हम जनता की नब्ज नहीं पहचान सके इसलिए हमें सत्ता से हटा दिया गया। 1980 और 1984 में आप जनता के नजदीक नहीं थे, इसलिए आपको सत्ता से वंचित रखा गया। आपको यह तथ्य स्वीकार करना होगा। प्रतिशत के बारे में आप कुछ भी कह सकते हैं। आप 50 प्रतिशत और 49 प्रतिशत की बात करते हैं, श्रीमन् क्या मैं आपको याद दिलाऊं कि आपके दल को मात्र 5.8 प्रतिशत ही मत प्राप्त हुए।

आपको याद रखना चाहिए कि हालांकि आप दावा करते हैं कि आपकी आवाज लोगों की आवाज है, आप देश के रक्षक हैं लेकिन तथ्य यह है कि जनता की आवाज सभा के इस पक्ष से ही आती है।

प्रो० सैफुद्दीन सोज (बारामूला) : इस तरफ से भी।

श्री राजीव गांधी : मात्र दो सप्ताह पूर्व ही इस प्रतिशत का पता लग चुका है।

श्री सैफुद्दीन सोज : लेकिन दोनों का प्रतिशत समान है।

श्री राजीव गांधी : इस चुनाव में जो मुद्दे थे, वे बिलकुल स्पष्ट थे, और चुनावों के आरम्भ से ही मेरे मित्र कहते रहे हैं कि कांग्रेस मुद्दों के बारे में चर्चा नहीं कर रही है। लेकिन तथ्य यह है कि हम देश के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में बात कर रहे थे और वे उन मुद्दों को उठा रहे थे जोकि देश के लिए महत्वहीन थे। हमारे सामने एक ही मुद्दा था—भारत की एकता, अखण्डता और राष्ट्रवाद और इन्हीं की चुनावों में विजय हुई।

विपक्ष के मेरे बहुत से मित्र यह समझते हैं कि वे ही देश की चेतना के प्रहरी हैं। इन चुनावों ने कांग्रेस को देश की चेतना का प्रहरी चुना है।

श्री सुधिनी जयपाल रेड्डी (महबूबनगर) : श्रीमन्, हम प्रधानमंत्री को सुनना चाहते हैं।

सभापति महोदय : कृपया व्यवधान न डालिये। एक अच्छे सांसद बनें। लेकिन मेज को बार-बार थपा-थपाकर हमें बाधा डाली जा रही है।

श्री राजीव गांधी : मैं समझता हूं कि हम उन्हें माफ कर देंगे। वह विधान सभा से आये हैं और हम जानते हैं कि वहां कैसे कार्यवाही होती है। इसलिए हमें उन्हें यह सीखने के लिए समय देना चाहिए कि सदन में कैसे बरताव किया जाता है।

श्री सुधिनी जयपाल रेड्डी : मैं वहां 16 वर्ष तक सदस्य रहा हूं। और मुझे वहां कुछ और नहीं सीखना है।

श्री राजीव गांधी : क्या आप कुछ और कहना चाहेंगे?

धन्यवाद।

[श्री राजीव गांधी]

पिछले कुछ दिनों में हमने भारत में जासूसी के एक बहुत गम्भीर मामले का पर्दाफाश किया है। मैं इस समय इस विषय में अधिक नहीं बता सकता क्योंकि अभी जांच चल रही है और अगर मैं कुछ कहूंगा तो इससे जांच प्रभावित हो सकती है, सभा के दोनों पक्ष के सदस्यों को समझ लेना चाहिए कि इस विषय पर हमें सबके सहयोग की आवश्यकता है। यह कोई कांग्रेस बनाम विपक्ष की घटना नहीं है। यह कोई ऐसी भी घटना नहीं है जिससे हममें से कोई राजनैतिक लाभ उठाना चाहता हो। इसका सारे राष्ट्र से संबंध है। इसका पर्दाफाश इसलिए किया गया क्योंकि हम ऐसा चाहते थे और हमने कुछ विशिष्ट क्षेत्रों की जांच की, जहां हमने पाया कि सही कार्य नहीं हो रहा और जहां कहीं आवश्यक समझा हमने कार्यवाही भी की है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि हालांकि मेरे निजी स्टाफ के बहुत ही वरिष्ठ अधिकारी ने त्यागपत्र दे दिया है परन्तु उसके विरुद्ध कोई आरोप नहीं है। सिविल सेवाओं में उच्च आदर्श बनाये रखने के लिए, उन्होंने यह निर्णय लिया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि हम गहराई से इसकी जांच कर रहे हैं, इसके हर पहलू को जांच कर रहे हैं कि यह कैसे हुआ और इससे देश को क्या हानि पहुंची है। जब मैं इस बारे में अधिक बताने की स्थिति में हूंगा तो मैं आपको पूर्ण सूचना दूंगा।

पंजाब और असम की समस्याएं हैं। हम इन्हें सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं और हमें आशा है कि हम इस सभा के सामने कोई समाचार लाने में समर्थ होंगे, शायद इस अधिवेशन में नहीं। लेकिन मुझे आशा है कि हम इस बारे में प्रगति करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभा में विद्यमान विपक्षी दलों और उन विपक्षी दलों का भी जोकि यहां नहीं, इन विशेष समस्याओं को हल करने में हमें सहयोग प्राप्त होगा।

श्रीमन्, भारत में अल्पसंख्यकों की समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। तनाव से दंगे उत्पन्न होते हैं। लेकिन जब हम वास्तव में देखते हैं तो पाते हैं कि इसका मूलकारण आर्थिक असमानता है और हमें इसे दूर करना होगा। हमारी सरकार इस समस्या को हमेशा के लिए जड़ से समाप्त करना चाहती है।

कुछ ही दिनों में दिल्ली में छः राष्ट्रों का एक शिखर सम्मेलन होने जा रहा है। शांति की दिशा में निरस्त्रीकरण की दिशा में यह एक और कदम है, और हम आशा करते हैं कि इससे विश्व में तनाव कम होगा। भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का भारी समर्थक रहा है, इसका संस्थापक सदस्य है, और इसके प्रति हमारी नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वास्तव में हम और दिलचस्पी लेंगे, और अधिक संबंध संपर्क बनायेंगे और दक्षिण-दक्षिण के देशों में संवाद और आदान-प्रदान में सुधार करने का प्रयत्न करेंगे। हम यह भी सुनिश्चित करेंगे कि तीसरे विश्व के देश आपस में मिलकर सहयोग करें क्योंकि हमने पाया है कि जहां कहीं भी दूरदृष्टि से कार्य नहीं किया गया और हमने विदेशी विचारों को अपनाया, दूसरा परिणाम विकास न होकर विनाश ही हुआ है, इसी प्रकार हम दक्षिण एशियाई क्षेत्र में हमारे पड़ोसियों के साथ और हमारे उपमहाद्वीप में बेहतर सहयोग की आशा करते हैं।

पाकिस्तान के साथ हमारे कुछ मतभेद हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री जिया जब पीछे भारत आए थे तब उनके साथ हमारी बातचीत बहुत सद्भावनापूर्ण और लाभदायक रही उनकी बातों में आश्वासन था। मैं काफी आशावान था और अब भी हूं लेकिन दुर्भाग्यवश इस बीच वहां के नौकरशाही तथा सरकार के अन्य सदस्यों के कुछ कार्य भारत-पाकिस्तान संबंधों को अच्छा बनाने में सहायक नहीं पाये गये। हम पाकिस्तान से सकारात्मक प्रतिक्रिया की आशा करते हैं।

श्रीलंका में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में सभा को जानकारी है। जिस प्रकार से सर्वदलीय सम्मेलन समाप्त हुआ उससे हमें निराशा हुई है। इसका कोई हल भी नजदीक नहीं है, इससे भी हमें निराशा हुई है और जिस प्रकार से सुरक्षा बलों को लगाया गया है और उसका प्रयोग किया गया है उससे भी हमें निराशा हुई है। हम श्रीलंका से उच्चस्तर पर बातचीत करेंगे और इस समस्या को हल करने के लिए हर संभव प्रयत्न करेंगे। हमें उनकी सहायता करनी ही है क्योंकि हमारे यहां काफी संख्या में शरणार्थी आये हैं। और हम ऐसी स्थिति उत्पन्न करना चाहेंगे जिससे कि श्रीलंका से आयें शरणार्थी वापस घरों को लौट सकें।

श्रीमन्, इस वर्ष के अन्त में मैं अमेरिका और सोवियत संघ की यात्रा पर जा रहा हूं। और जो कुछ वहां बातचीत होगी, उससे मैं सभा को अवगत कराऊंगा। हम अन्य देशों से भी अधिक आदान-प्रदान करने की कोशिश करेंगे। हम विश्व के सभी देशों से बेहतर मैत्री संबंध रखने की कोशिश करेंगे।

अपने भाषण में, राष्ट्रपतिजी ने हमारे भावी कार्यक्रम का जिक्र किया है, श्रीमन्, यह सरकार स्वच्छ सार्वजनिक जीवन के प्रति वचनबद्ध है। और हमने इस दिशा में कदम उठाने आरम्भ कर दिये हैं। चुनाव सुधारों के प्रति हम वचनबद्ध हैं। निर्वाचन प्रक्रिया में सुधार के बारे में हम सभा के सभी वर्गों से चर्चा करेंगे और हमें आपसे पूर्ण सहयोग की आशा है क्योंकि अगर निर्वाचन प्रक्रिया में सुधार संबंधी वार्ता में 10 वर्ष लग जाते हैं तो इससे कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए हम इस पर शीघ्र कार्यवाही करना चाहते हैं, शीघ्र! लेकिन जल्दबाजी में नहीं---ताकि किसी परिणाम पर पहुंच सकें जिससे कि जिन मुद्दों पर सहमति हो उनके अन्तर्गत आगामी चुनाव किये जा सकें।

पिछले कुछ दिनों से हम विपक्ष से तथा अपने साथियों से दल-बदल विरोधी विधेयक पर चर्चा करते रहे हैं। हम महसूस करते हैं कि स्वच्छ सार्वजनिक जीवन के लिए, यह एक अति आवश्यक मुद्दा है। श्रीमन्, हमें यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी तरह किसी भी तरीके से वहीं पर भी दल-बदल न हो। इस बारे में विपक्ष से हमारी कुछ बातचीत हुई है। कुछ दल सख्त विधेयक चाहते हैं। कुछ दल इस बारे में नरम विधेयक चाहते हैं। मैं आशा करता हूं कि हम इस मतभेद को समाप्त कर किसी उचित परिणाम पर पहुंच पायेंगे, क्योंकि ऐसे किसी विधान को हम वास्तव में ढूंढ रहे हैं। यह एक नई बात है, जिसे हम लागू करने जा रहे हैं। इस बारे में कोई पूर्वोदाहरण भी नहीं है, हमें खुद ही अपना रास्ता बनाना है। लेकिन इसका यह अर्थ भी है कि हमें कुछ और वस्तुपरक होना पड़ेगा, हमें कुछ और ताकत दिखानी होगी और इसको करने के लिए हिम्मत दिखानी होगी। श्रीमन्, हमारी तरफ से इस बारे में कमी नहीं आयेगी।

श्रीमन्, भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है, आने वाले वर्षों में हम किसानों के लिए बहुत कुछ करने जा रहे हैं। हमें सुनिश्चित करना होगा कि कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो। हमें यह देखना होगा कि किसानों को कृषि संबंधी सामग्री उचित मूल्यों पर मिले। हमें यह भी देखना होगा कि वसूली मूल्य सही हो। तभी हम जो विकास चाहते हैं उसे प्राप्त कर सकते हैं। हम इन बातों की ओर ध्यान देंगे और मैं आशा करता हूं कि हमारे कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि होगी।

श्रीमन्, जैसा कि राष्ट्रपति जी ने कहा, हम वस्त्र उद्योग की तरफ ध्यान देंगे। कई वर्षों से वस्त्र उद्योग की हालत काफी खराब है। और जब मैं वस्त्र उद्योग की बात करता हूं तो मैं उनमें हथकरघों बुनकरों, उद्योग के छोटे स्तर से उच्चतम यंत्रीकृत स्तर तक को शामिल करता हूं। हमें एक नई नीति का विकास करना है, जिससे कि कोई भी बेरोजगार न बने, लेकिन साथ ही हमें याद रखना है कि हमारी वस्त्र नीति का ध्येय नौकरियां दिलाना नहीं, बल्कि कपड़ा तैयार करना है। ऐसी दरों पर कपड़ा निर्मित करना जिसपर हमारे देश की जनता, गरीब लोग उसे खरीद सकें। हम इस दिशा में कार्य करने और इस उद्देश्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

हम एक नई औद्योगिक नीति बनायेंगे, हमें यह महसूस करना चाहिए कि विपक्ष में बैठे हमारे मित्रों के कहने के बावजूद, पिछले 35 वर्षों के दौरान भारत ने काफी प्रगति की है, और अब हमें एक सुनहरे भविष्य की कल्पना चाहिए। अगर हमारे उद्योग को प्रगति करनी है, अगर हमें अपने उद्योगों को विश्व के उद्योगों के समकक्ष लाना है तो इन्हें उन्हीं परिस्थितियों में कार्य करना होगा। हमें इस दिशा में कार्य करना होगा। हमें रोजगार उपलब्ध कराने की तरफ ध्यान देना होगा। उद्योग ही केवलमात्र ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां रोजगार उपलब्ध किया जा सके। कई दफा तो रोजगार उपलब्ध कराने के लिए यह बहुत ही असमर्थ क्षेत्र साबित होता है। हमें यह देखना होगा कि हम उद्योगों से ज्यादा रोजगार कैसे उपलब्ध करवा सकते हैं। मैं उद्योगों को बन्द करने या सभी उपलब्ध उद्योगों में भारी परिवर्तन की वकालत नहीं कर रहा हूं।

[श्री राजीव गांधी]

मैं यह कह रहा हूं कि हमारी शिक्षा नीति, औद्योगिक नीति और व्यापार नीति ऐसी होनी चाहिए जिससे कि भविष्य में भारत विश्व के अन्य देशों का मुकाबला कर सके। हम अन्य देशों के मुकाबले का दावा नहीं कर सकते क्योंकि हमारी अवस्था 10 या 20 वर्ष उनसे पीछे है। आज विश्व तेजी से आगे बढ़ रहा है और इस दिशा में हम एक नई शिक्षा नीति की घोषणा करने जा रहे हैं जिसका स्वरूप और अधिक आधुनिक किस्म के रोजगार उपलब्ध कराना होगा। हम एक नई औद्योगिक नीति लागू करेंगे जिससे इस प्रकार के रोजगार पैदा होंगे और हमारी औद्योगिक नीति इसके अनुरूप होगी। अगले वर्ष तक हम इसे लागू करने की कोशिश करेंगे।

हमेशा से ही न्यायिक प्रणाली का संचालन एक मुश्किल कार्य रहा है। न्यायिक प्रणाली न्याय देने के लिये होती है और अगर न्याय देने में देरी होती है तो इसका अर्थ होता है न्याय का न दिया जाना। हम इस ओर ध्यान देंगे कि कैसे सभी स्तरों पर शीघ्र न्याय उपलब्ध कराया जा सकता है। एक ओर जहां समाज का प्रत्येक वर्ग प्रगति कर रहा है वहां हम पाते हैं कि सभी वर्गों, जातियों और क्षेत्रों में महिलायें इस बारे में पीछे रह जाती हैं। इसलिये हमने महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम बनाये हैं। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए विशेष कार्यक्रम बनें और इन्हें हम आपके सामने रखेंगे। हमने पहले ही घोषणा की है कि माध्यमिक स्तर तक हम लड़कियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करेंगे।

एक माननीय सदस्य : आप इन्हें होस्टल की सुविधाएं प्रदान कीजिए।

श्री राजीव गांधी : मैं चाहता हूं कि हम ऐसा कर पायें। जब शिक्षा नीति पर चर्चा होगी, तब मैं इस पर कुछ कहना चाहूंगा।

महिलाओं के लिए, हम चाहेंगे कि स्वयंसेवी संगठन विशेष रूप से आगे आएं और इसमें प्रमुख भूमिका अदा करें।

इस चुनाव में वास्तव में भारत की युवा शक्ति का प्रदर्शन हुआ है और इसीलिए सभा के दोनों पक्षों में आयु में इतना अन्तर है। हमें युवकों को रोजगार देने के लिए और इस महान राष्ट्र के निर्माण में उनको सहयोजित करने के लिए बहुत ही विशेष कार्यक्रम बनायेंगे।

हमारे देश के बहुत बड़े भाग में वन नहीं हैं और बाकी भूमि बेकार पड़ी है। हम इन क्षेत्रों का विकास करने जा रहे हैं व इसके काम देखने के लिए एक वेस्ट लैंड डेवलपमेंट बोर्ड की स्थापना की जा रही है। इन क्षेत्रों का विकास केवल जंगलों के रूप में नहीं किया जायेगा बल्कि इस तरह से किया जायेगा ताकि विकसित की गई भूमि से प्राप्त लाभ आसपास के लोगों को मिल सकें। यह स्थानीय जनता के फायदे के लिए होगी ?

हम देश में वायु और जल को स्वच्छ करने की योजनाएं बना रहें हैं। हमने भोपाल की हाल ही की दुर्घटना देखी जहां बहुत से व्यक्ति मारे गये और दुर्घटनाग्रस्त हो गये या अपंग हो गये हैं ? मुझे बताया गया है कि इस भयानक दुर्घटना के कुछ प्रभाव आगामी छः महीनों में भी ज्ञात नहीं हो सकेंगे। हम इस प्रकार के कारखाने लगाने के स्थान संबंधी नीति पर विचार कर रहे हैं और यह भी सोच रहे हैं कि इन कारखानों द्वारा वायु व नदियों का प्रदूषण कैसे रोका जा सके। हमारी नदियां अत्यन्त प्रदूषित हो गयी हैं। गंगा पहली नदी है जो हम साफ करने जा रहे हैं। मैं पवित्र करने की बात नहीं कहूंगा क्योंकि कोई भी गंगा को पवित्र नहीं कर सकता। लेकिन हम साफ करने की कोशिश करेंगे। हमने ...

श्री सी० माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : यह एक अत्यन्त मुश्किल काम है।

श्री राजीव गांधी : हां, यह एक अत्यंत कठिन कार्य है। लेकिन हमने लोग चुन लिए हैं और महसूस करते हैं कि हम यह कार्य कर सकने में सक्षम हैं।

श्री सी० माधव रेड्डी : आप पहले अपना घर देखिए।

श्री राजीव गांधी : इसी कारण तो आप वहां है और हम यहां । हमने गंगा को साफ करने के लिए केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण की स्थापना की है । मेरे दोस्त गंगा में इतनी दिलचस्पी ले रहे है । गंगा में जो प्रदूषण है उसका केवल 20 प्रतिशत रसायन प्रदूषण है व 80 प्रतिशत गंदे नालों व मलमूत्र का प्रदूषण है और हम इसको समयबद्ध कार्यक्रम द्वारा साफ करेंगे ।

इस सरकार से आपको नतीजें देखने को मिलेंगे ।

यह सरकार देश की सांस्कृतिक विरासत की ओर भी गम्भीरतापूर्वक ध्यान दे रही है । हमारी योजना अपनी सांस्कृतिक विरासत को सिर्फ संभालने व बचाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश के प्रत्येक क्षेत्र, समुदाय की संस्कृति का कैसा विकास हो इसके लिए भी हम सोच रहे है । हम इसको एक बड़े कार्यक्रम के रूप में अमल में लाएंगे ।

इन सबको करने के लिए हमें एक कुशल, स्वच्छ व उत्तरदायी प्रशासन की आवश्यकता होगी और हम ऐसा प्रशासन आपको देंगे ।

भारत को आगे ले जाने के लिए हमें यह देखना होगा कि हमारे साधनों का भरपूर उपयोग हो । हमारा सबसे बड़ा साधन मानव शक्ति है और हमें यह देखना है कि इसका विकास कैसे हों । हम अपने प्राकृतिक साधनों का विकास करेंगे व अपनी औद्योगिक व पूंजीगत संसाधनों का उपयोग अधिकतम फायदे के लिए करेंगे ।

यह सब करने के लिए हमें प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होगी । हमें एक नई शिक्षा प्रणाली की जरूरत होगी । हमें अपने लोगों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा ताकि वे इस कार्य को सिद्ध कर सकें । परंतु इनसे ज्यादा इसके लिए प्रबंधकीय कुशलता व राजनीतिक इच्छा की जरूरत है और हम दोनों ही आपको देंगे । लेकिन आगे बढ़ने के लिए जब कोई भी व्यक्ति अपनी कमर कसता है तो उसको थोड़ी कसन तो महसूस होती है । और यहां कसन अनुशासन में लायी जाएगी हमें अनुशासन लाना ही होगा । हमें संस्थाओं का सम्मान करना होगा और हमें अपनी आजादी के लिए नहीं बल्कि देश की आजादी के लिए फिर से सोचना होगा ।

महोदय, आगामी वर्षों में हम एक ऐसा संगठित, धर्मनिरपेक्ष आजाद भारत बनाएंगे जिसमें व्यक्ति का मूल्य उसकी जात, धर्म व क्षेत्र से नहीं आंका जायेगा । हम एक गतिशील भारत बनाएंगे, एक ऐसा भारत जो बाकी संसार के संग आगे बढ़ सके ।

मैं एक बार फिर से उन सदस्यों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया और सिफारिश करता हूं कि राष्ट्रपति के अभिभाषण को स्वीकार किया जाए ।

अध्यक्ष महोदय : सदस्यों द्वारा राष्ट्रपति के अभिभाषण पर काफी संख्या में संशोधन दिए गये हैं । अगर सदन सहमत हो तो मैं सारे संशोधन एक साथ सदन के समक्ष मतदान के लिए रखूंगा ....।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : अगर सब संशोधन एक साथ रखे गये तो इसका अर्थ होगा "सामूहिक हत्या" ।

अध्यक्ष महोदय : मैं अब सारे संशोधन सदन के समक्ष मतदान के लिए एकसाथ रखता हूं ।

संशोधन मतदान के लिये रखे गये और अस्वीकृत हुए

अध्यक्ष महोदय : अब मैं सदन के समक्ष मूल प्रस्ताव मत के लिए रखता हूं ।

प्रश्न है :

कि राष्ट्रपति को सभा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए :—

"कि इस सत्र में समवेत लोकसभा के सदस्य, राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिए, जो उन्होंने 17 जनवरी, 1985 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यंत आभारी हैं ।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।